इतिहास- प्राचीन भारतीय **इतिहास जानने के स्रोत**

[SOURCES OF ANCIENT INDIAN HISTORY]

धर्मनिरपेक्ष साहित्य

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त ऐसा साहित्य भी उपलब्ध है, जिसका किसी धर्म से न तो सीधा सम्पर्क है और न ही किसी धर्म विशेष से प्रभावित है ऐसे साहित्य को धर्मनिरपेक्ष साहित्य या धर्मोत्तर साहित्य के नाम से जाना जाता है। धर्मनिरपेक्ष साहित्य के ग्रन्थों से प्राचीन भारत के विषय में मुहत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। धर्मोत्तर साहित्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण ग्रन्थ निम्नांकित हैं-

(i) कौटिल्य का अर्थशास्त्र—'अर्थशास्त्र' नामक इस प्रन्थ की रचना चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमन्त्री कौटिल्य ने ई.पू. चौथी शताब्दी में की थी। इस ग्रन्थ से तत्कालीन शासन-व्यवस्था के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है ।

(ii) पाणिनी की अष्टाध्यायी- इस ग्रन्थ से मौर्य काल के पूर्व की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है।

(iii) विशाखदत्त का मुद्राराक्षस- इस ग्रन्थ से नन्द वंश के पतन और चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा बनाए जाने के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

(iv) पतंजलि का महाभाष्य- इस ग्रन्थ से मौर्य वंश और शृंग वंश के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(v) बाणभट्ट का हर्षचरित- इस ग्रन्य की रचना सातवीं शताब्दी में की गई थी। इस ग्रन्थ से हर्षकालीन घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

(vi) गार्गी संहिता- इस ग्रन्य से भारत पर यवनों के आक्रमण की जानकारी प्राप्त होती है।

(vii) कल्हण की राजतरंगिणी- इस ग्रन्थ की रचना बारहवीं शताब्दी में हुई थी। इस ग्रन्थ से कश्मीर के इतिहास के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(viii) विल्हण का विक्रमांकदेवचरित- इस ग्रन्थ से चालुक्य वंश के इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है।

(ix) वाक्पति राज का गौडवाहो- इस ग्रन्थ से कन्नौज नरेश यशोवर्मन की विजयों की जानकारी मिलती है।

(x) चन्दवरदायी का पृथ्वीराज रासो- इस ग्रन्थ से चौहानवंशीय शासक पृथ्वीराज चौहान के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

(xi) परिमल गुप्त का नवसाहसक चरित- इस ग्रन्थ से परमार वंश के इतिहास के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(xii) कालीदास का मालविकाग्निमित्रम- इस ग्रंथ से पुष्यमित्र शृंग और यवनों के मध्य हुए संघर्ष के विषय में जानकारी मिलती है।

(xiii) कालीदास का अभिज्ञान शाकुन्तलम्- इस ग्रंथ से गुप्तकालीन उत्तर तथा मध्य भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक मिलती है।
(xiv) कालीदास का रघुवंश- इस ग्रंथ से गुप्तवंशीय सम्राट समुद्रगुप्त की दिग्विजय की झलक मिलती है।

(2) विदेशी यात्रियों के वृतान्त [Accounts of Foreigneral

भारतीय इतिहास की जानकारी प्रदान करने में विदेशी यात्रियों तथा लेखकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन काल में अनेक विदेशी यात्री और विद्वान भारत आये और उन्होंने अपने यात्रा सम्बन्धी वृतान्तों को लिपिबद्ध किया। उनके यात्रा विवरणों से तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थिति के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। विदेशी यात्रियों के यात्रा वृतान्तों के पर प्रकाश डालते महत्व हुए डॉ.रमाशंकर त्रिपाठी ने लिखा है, "इनसे भारतीय तिथि के अशान्त सागर में समसामयिकता स्थापित करने में सहायता मिलती है।"
विदेशियों के वृतान्तों का विवेचन चार वर्गों में किया जा सकता है-
(i) यूनानी लेखक, (ii) चीनी लेखक, (iii) तिब्बती लेखक, (iv) अरबी लेखक,
(i) यूनानी लेखक- यूनानी लेखकों में 'हेरोडोटस' (Herodous) प्राचीनतम लेखक हैं। हेरोडोटस ने पाँचवीं शताब्दी ई. पू. में भारतीय सीमा प्रान्त व हखमी साम्राज्य के मध्य राजनीतिक सम्पर्क पर प्रकाश डाला है।

यूनानी शासक सिकन्दर के साथ भारत आए अनेक विद्वानों ने भी भारत के विषय में अपने विचार लिपिबद्ध किए। इन विद्वानों में निआर्कस (Nearchus), ओनेसिक्रिटस (Onesicritus) व एरिस्टोव्यूलस (Aristobulus) प्रमुख हैं।

यद्यपि इन विद्वानों की रचनाएँ अब उपलब्ध नहीं हैं, किन्तु उनको अन्य यूनानी लेखकों द्वारा उद्धरित किया गया है।

चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में 'मैगस्थनीज' यूनानी राजदूत के रूप में भारत आया था। उसने अपनी पुस्तक 'इण्डिका' में
भारतीय संस्थाओं भूगोल, कृषि आदि के विषय में व्यापक प्रकाश डाला है। यद्यपि उसकी पुस्तक उपलब्ध नहीं है, किन्तु उसकी इस पुस्तक के कुछ उद्धरण प्राचीन यूनानी लेखकों एरियन, स्ट्रैवो व जस्टिन आदि की रचनाओं में मिलते हैं।

यूनानी लेखक टॉलमी (Ptolemy) ने दूसरी शताब्दी ईसवी में भारत का भौगोलिक वर्णन लिखाजिससे अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

यूनानी लेखक पिलनी (Pliny) द्वारा रचित 'नेचुरल हिस्ट्री' में भारतीय पशुओं, पौधों और खनिज पदार्थों के बारे में जानकारी मिलती है।

(ii) चीनी लेखक- चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण फाह्यान, व्हेनसांग व इत्सिंग के वृतान्त हैं।

फाह्यान पाँचवीं शताब्दी ईसवी में भारत आए थे,वह लगभग 14 वर्षों तक भारत में रहे। उन्होंने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के बारे में लिखा ।

व्हेनसांग, सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आए थे, वह लगभग 16 वर्षों

तक भारत में रहे। उन्होंने भारत की धार्मिक अवस्था के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन अपने वृतान्त में किया है। भारतीयों के रीति-रिवाजों और शिक्षा पद्धति पर भी व्हेनसांग के वृतान्त से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इतिहासकारों ने व्हेनसांग को 'यात्रियों का राजा' कहा है।

इत्सिंग सातवीं शताब्दी ईसवी में भारत आए थे, वह बहुत समय तक विक्रमशील विश्वविद्यालय और नालंदा विश्वविद्यालय रहे। उन्होंने संस्थाओं और भारतीयों में बौद्ध शिक्षा की वेश-भूषा, खान-पान आदि के विषय में भी लिखा है।

(iii) तिब्बती लेखक- तिब्बती लेखकों में बौद्धलामा तारानाथ का विवरण भी। ऐतिहासिक महत्व का है। उनके द्वारा रचित कंग्युर और तंग्युर नामक ग्रन्थों से मौर्यकाल और उसके पश्चात् की घटनाओं को जानकारी प्राप्त होती है

(iv) अरबी लेखक- अरबी यात्री और इतिहासकार आठवीं शताब्दी के उपरान्त भारत की ओर आकर्षित हुए। अरब यात्रियों के वृतान्तों का भारतीय इतिहास की दृष्टि से विशिष्ट महत्व है।

अरब यात्रियों में अल्बरूनी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अल्वरूनी ने 'तहकीक-ए -हिन्द' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। उन्होंने अपनी इस पुस्तक में ग्यारहवीं शताब्दी ईसवी के भारत की दशा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। अल्बरूनी के अतिरिक्त अल-बिलादरी, सुलेमान व अल-मसूदी आदि प्रमुख यात्रियों के वृतान्तों से भी पता चलता है कि किस प्रकार मुसलमानों ने भारत पर अधिकार किया।